हरियाणवी लोक नाट्य परम्परा में साँग

डॉ. अंजू शर्मा
सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग
सनातन धर्म कॉलेज (लाहौर), अम्बाला छावनी।

लोक साहित्य का सम्यक अध्ययन किए बिना हम किसी देश की सभ्यता एवं संस्कृति, धर्म व रीति–रिवाज, कला और साहित्य, का सूक्ष्म अवलोकन नहीं कर सकते। साहित्य से हमें किसी विशेष देश की तत्कालीन संस्कृति का आभास भले ही मिल जाए परन्तु संस्कृति कैसे पनपी, इसका संकेत पाना कठिन कार्य है जबकि लोक साहित्य के द्वारा यह कार्य सुगंमता से हो जाता है। लोक साहित्य का गम्भीर अध्ययन जीवन और जगत की मौलिक एवं प्रामाणिक खोज के लिए आवश्यकीय है।

लोक साहित्य परम्परा :– लोक साहित्य किसी भी समाज एवं देश की संस्कृति का दर्पण होता है। लोक साहित्यं में विशेष स्थान संस्कृति ही बोलती है। साहित्य को संस्कृति का इतिहास कहें तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी। संस्कृति धीरे–धीरे स्वयं विकसित होती है। संस्कार जब किसी विशेष स्थान की मिट्टी में रच–पच जाते हैं तो वे संस्कृति बन जाते हैं और इसकी स्वाभाविक अभिव्यक्ति लोक साहित्य के माध्यम से होती है।

लोक सहित्य को बनाने में किसी एक व्यक्ति का नहीं बल्कि समग्र समाज का हाथ होता है।

लोक साहित्य, साहित्य का वह रूप है जिसमें अलंकारों के प्रति आग्रह ही न होकर बल्कि सहज प्रयोग भी है।

पं. राम नरेश त्रिपाठी के अनुसार – "ग्राम गीत और महाकवियों की कविता में अंतर है। ग्रामगीतों में रस है, महाकाव्य में अलंकार। ग्रामगीत हृदय का धन है और महाकाव्य मस्तिष्क का । ग्राम गीत प्रकृति के उद्‌गार हैं, इनमें अंलकार नहीं केवल रस है, छन्द नहीं केवल लय है, ललित्य नहीं केवल माधुर्य है।

हरियाणा का मौलिक साहित्य हरियाणा के भजनों, कथाओं, गीतों, लोकेक्तियों, मुहावरों एवं लोक नाट्य आदि में सुरक्षित है। अतः सांगों के विवेचन के बिना हरियाणवी संस्कृति को पूर्णतः में नहीं जाना जा सकता।

हरियाणा के लोगों का रहन–सहन, रीति–रिवाज, विश्वासों एवं आस्थाओं का वर्णन साँगों में विस्तृत रूप में संजोया हुआ है। सांग एव ऐसा भण्डार है जो हमारी संस्कृति की कणी–मणियों से भरा पड़ा है।

लोक साहित्य का वर्गीकरण

हरियाणा के लोक साहित्य का विभाजन दो रूपों में किया जा सकता है।

1. दृश्य 2. श्रव्य । 'दृश्य' के अन्तर्गत नाट्य, संगीत, नौंटकी, रामलीला तथा रास लीला आदि विधाएं आती है। श्रव्य के अन्तर्गत कथा, वार्ता, कहावतें, गीत आदि आते है।

लोक साहित्य के वर्गीकरण के गहन विश्लेषण की ओर न जाकर अपने मुख्य विषय हरियाणवी लोक नाट्य विधा अर्थात् उसके उपभाग साँग का विवेचन करना आवश्यक है।

लोक नाट्य परम्परा

लोक नाट्य एवं लोक साहित्य का अटूट सम्बन्ध है। लोक नाट्य में लोक साहित्य के गीत, वार्त्ता, लोकोक्तियों, मुहावरें, नृत्य, नाट्य आदि सभी अंगों का समावेश हो जाने से लोक–साहित्य, लोक–नाट्य का एक अंग ही कहा जा सकता है। लोक–नाट्य एक ऐसा दर्पण है जिसमें समाज के जीवन का उसकी भावनाओं– कल्पनाओं का अत्पन्त उज्ज्वल स्वरूप प्रतिबिम्बित होता है और उसी प्रतिबिम्ब में वह अपनी उदार भावनाओं का उनके नाना रूपों में दर्शन कर लेता है।

डॉ. नगेन्द्र ने लोक–नाट्य की गरिमा को रेखांकित करते हुए लिखा है कि लोक–नाट्य साहित्य इतना विशाल और महत्त्वपूर्ण है कि इस में भारतीय संस्कृति का सहज रूप देखा जा सकता है। हरियाणा की लोक नाट्य परम्परा में साँग का विशेष महत्व है। साँग पुराने बुजर्ग लोगों के लिए प्रिय माना जाता था, लेकिन वास्तविकता यह है कि वर्तमान का युवा वर्ग भी सॉग से कम लगाव नहीं रखता। साँग अनपढ़, अर्थ शिक्षित लोगों में ही नहीं उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों में ही यह उतना ही लोक प्रिय है। सच तो यह है कि साँग हरियाणा का जनप्रिय लोक नाट्य है जिसका सम्बन्ध इस धरती की माटी से है।

साँग का स्वरूप

साँग शब्द का सम्बन्ध संस्कृत के किस शब्द से है, यह कहना अनिश्चित है – किन्तु यह स्वांग का तद्भव रूप ज्ञात होता है। साँग का अर्थ होता है भेब भरना, रूप भरना या नकल करना। हरियाणा में 'साँग भरना', एक लोकोक्ति प्रसिद्ध हैं जिसका अर्थ होता है – रूप भरना या रूप बनाना । वास्तव में 'स्वाँग' वह रूप बनाना कहलाता है जब प्रयत्न करने पर भी रूप का यथा–तथ्य आरोपण न हो सके और पात्र में विकृति आ जाए। साँग का जो रूप आज हमारे सामने है अथवा पहले रहा होना उसके आधार पर यह स्वाँग जैसा ही लगता है।

साँग में पद्य की पधानता होती है। यह अभिनयात्मक रूपक है। पद्यमय कथ्य व कथोपकथत के बीच गद्य, वार्ता कथा को मोड़ देने का काम करता है। कथा की रोचकता को बनाया रखने में इसका विशेष योगदान रहता है।

हरियाणवी साँगों में पद्यं की संस्कृति बोलती है। गृहस्थाश्रम लोक जीवन की धुरी है सारा समाज इसके चारो ओर घुमता हुआ सादा गतिमान होता है। सांगों में हमारा पारिवारिक–सामाजिक परिवेश चित्रित होता है। सुख–दुःख, विरह–मिलन, तप–त्याग, दान–धर्म, पाप–पुण्य, ईर्ष्या–प्रेम आदि के समायोजन से कथा में मार्मिकता तथा मोड़ आते रहते हैं। पं. मांगेराम के साँग 'ध्रुव का जन्म' में अवधपुरी के महाराज उन्नानपाद की पत्नी सुनीति वृद्धावस्था में सन्तान के मोह वश हाकर अपनी छोटी बहन सुरूधि से उनकी शादी करवा देती है। बेमेल विवाह होने के कारण सुरूधि उससे नाराज हो जाती है और कानबंद्ध राजा से अपनी बड़ी बहन को दुहाग दिलवा देती है। बदले की भावना और ईर्ष्या का चित्रण निम्न छन्द में देखिए–

तीन वचन मनै पहलां ले लिए बाकी एक वचन मेरा।
चौथा वचन ईब लेण्या सै यू देखै कुटुम्ब खड़ या तेरा।।

एक ओर तो बड़ी रानी, जिस के साथ पूरी उम्र सुख–दुःख बांटे और दुसरी ओर वचन बहुता। ऐसी असहाय परिस्थितियों में फसें व्यक्ति का अन्तर्द्वन्द्व देखिए निम्न छन्द में –

ऊंट के गल म्हं बूट बांध दिया क्यूकर मुंह घालूग्यां।
हाथ–हथकड़ी पायां–बेड़ी किस तरियां चालूगॉ।।

माता–पिता कै जन्म लिया था किस्मत सौली लेके।

पंचॉ कै म्हॅ फेरे ले लिए चादर धौली ले कै।

बूढा मृग शिकारी गेल्यां होर्‌या गोली ले कै।

गाम बस्‌या ना मंगते फिरग्ये कांधे झोली ले कै।

गाम भी भूखा तू भी भूखों मैं कित तै खाल्यॅूगा।।

पिता के लिए सारी सन्तानें प्रिय होती है। बड़ी रानी का लड़का ध्रुव पिता की गोद में आकर बैठ जाता है तो छोटी रानी उस की कमर में लात मारती है। ऐसी स्थिति में पिता के हृदय पर क्या गुजरती है, देखिए, कितना मार्मिक चित्रण हैं –

आत्मा सो परमात्मा ऋषि महात्मा बतावैं ज्ञान।

ध्रुव धर्म से दूर नहीं सै आत्मा स्वरूप मेरी सन्तान।

पिता–पूत म्हंफर्क नहीं सै पत्नि–पति परम परिवार।

पिता बणै जब पुत्र बणतां पुत्र परम पिता का सार।

पति बर्णे जन पत्नि बणती पुत्र पिता का आज्ञाकार।

पूत कै मारै पिता कै लागें लात रही सै किस कै मार।

ध्रुव उन्नम म्हं फर्क नहीं सै एक बाप की दो है श्याम।।

बुढ़ापे में बेमेल विवाह के कारण अभिशप्त हुई पारिवारिवारिक शान्ति का यथार्थ के धरातल पर सहज–स्वाभाविक चित्रण किया गया है। कथा की समाप्ति पर 'नगर खेडें की जय' बोलने की परम्परा रहीं है।

इनके साँगों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनके साँगों के विषय पर बहुत कम साँग किसी अन्य सॅगीतकार विषयों पर बहुत कम साँग किसी अन्य संगीतकार ने बनाए होगें। कई विषय क्षेत्रों में तो वे पं. लखमीचन्द से भी उच्च स्थान पर विराजमान है। गुरु महिमा, राष्टीय चेतना, समसामायिक धटनाओं को चित्रण तथा धार्मिक क्षेत्र में सखा–भाव में इनका कोई सानी नहीं है।

पं. मांगेराम के पश्चात् रामकिशन व्यास के साँगों की धूम पूरे हरियाणे में खूब मची है। रामकिशन व्यास की रागनियों में चुटकीलापन है। सवाल–जवाब की शैली को अधिकतर अपनाया है। इनके सांगों के अधिकतर कथानक प्रेम कथाओं पर आधारित होने के कारण, श्रृंगार कथानक प्रेम कथाओं पर आधारित होने के कारण श्रृंगार रस का परिपाक

हुआ है। श्रृंगारिकता होते हुए भी हरियाणवी संस्कृति का चित्रण भी सफलता पूर्वक हुआ है।

उपरोक्त विवेचन को संक्षेप में कहा जा सकता है कि हरियाणवी साँग ने अपने पूर्व युग के नाट्य, नौट्की तथा भजनीक आदि विधाओं से कुछ विशेषताओं को लेकर अपने नए रूप की संरचना की जो कि एक स्वतंत्र विधा के रूप में लगभग तीन शताबदियों से जनपदों में लोगों के मनोंरजन की पूर्ति करती जा रही है।

सहायक ग्रन्थ सूची

1. हरियाणा लोक नाट्य परम्परा, रघुवीर सिंह मथाना।
2. हरियाणा की लोक धर्मों नाट्य परम्परा, डॉ. पूर्णचन्द शर्मा।
3. हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, डॉ. शंकरलाल यादव।
4. हिन्दी नाट्क साहित्य का इतिहास, डॉ. सोमनाथ गुप्त।
5. संगीत –'ध्रुव का जन्म', पं. मांगेराम।
6. पं. लखमीचन्द ग्रन्थावली, डॉ. पूर्णचन्द शर्मा।
7. संगीतः एक लोक नाट्य परम्परा , श्री राम नारायण अग्रवाल।